विचित्र आत्मा विचित्र परमात्मा
कराते विचित्र भविष्य की पढाई
ज्ञान रत्नों से करते श्रृंगार हमारा
चलता जो पूरा कल्प सारा
देह भान की मिट्टी से छुडाते
पवित्रता का ताज पहनाते
अविनाशी ज्ञान से होती
आत्मा की अविनाशी कमाई
संग आत्मा घर हाथ भरतु जाती
भक्ति के मांगने के संस्कार छूटते
बच्चा बन अधिकारी बन जाते
भिखारी बन जो मंदिरों में
शीश झुकाते, हो जाते पूज्य
देवी देवता फिर कहलाते
माया को यह सब रास न आये
विघ्न रूप बन कर टकराये
विचित्र बाप से जो योग लगाये
उसको हरी झंडी दिखलाये
शिव बाबा का मीठा लाल कहलाये
विचित्र पढाई में जो मन लगाये
पास विथ हॉनर हो जाये
मुरली कभी न वो मिस करे
मुरलीधर से पूरी प्रीत निभाये
व्यर्थ समय वो न गवाए

विजयी बन कर दिखलाये
निराकार सो साकार के
महामंत्र से भाग्य चमकाये
समय संकल्प को सफल कर
लास्ट सो फ़ास्ट .. फ़ास्ट सो फर्स्ट
बन तीव्र पुरुषार्थी कहलाये

ॐ शांति।